Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 418-424 *Journal Website www.academejournal.in*

भूमंडलीकरण और हिंदी कविता

कंचन रजक

(शोधार्थी)

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा बिहार

शोध सार-

भूमंडलीकरण आधुनिक विश्व की एक निर्णायक प्रक्रिया है, जिसने विश्व को केवल आर्थिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई स्तर पर भी गहराई से रूपांतरित किया है। तकनीकी विकास और जनसंचार माध्यमों के विस्तार ने भौगोलिक सीमाओं को अप्रासंगिक बना दिया है, जिसके परिणामस्वरूप संसार एक साझा सांस्कृतिक परिसर के रूप में उभरकर सामने आया है। इस बदली हुई वैश्विक स्थिति ने मनुष्य की चेतना, उसके अनुभव-बोध और जीवन दृष्टि को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इस परिवर्तनशील वैश्विक परिदृश्य का प्रभाव हिंदी भाषा के साथ-साथ हिंदी कविता पर भी स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होता है। भूमंडलीकरण के साथ विकसित बाजारवादी संस्कृति, उपभोक्तावाद और तकनीकी माध्यमों ने हिंदी कविता की विषयवस्तु, संवेदना और अभिव्यक्ति के स्वरूप को नया आयाम प्रदान किया है। समकालीन हिंदी कविता में अब वैश्विक पूँजी, विस्थापन, सांस्कृतिक टकराव, पहचान का संकट और डिजिटल जीवन जैसे अनुभव प्रमुखता से उभर रहे हैं। इस संदर्भ में कई महत्वपूर्ण हिंदी कवियों ने है अपनी कविता में भूमंडलीकरण से प्रभावित यथार्थ को प्रस्तुत किया हैं। इसमें राम दशरथ मिश्र, अरुण कमल, शंभू नाथ, रश्मि भारद्वाज,दिनेश कुमार आदि ने अपनी कविता में भूमंडलीकरण से प्रभावित सामाजवादी यथार्थ को रेखांकित किए हैं।

बीज शब्द– भूमंडलीकरण**,** बाजारवाद, उपभोक्तावाद, हिंसा, समाजिक, तकनीकी, यथार्थ।

प्रस्तावना–

भूमंडलीकरण का उदय बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक व्यापक सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक परिघटना के रूप में हुआ। यह पूर्ण रुप से एक कलात्मक क्षेत्र की परिघटना नहीं है। कला के साथ-साथ साहित्य को भी इसने प्रभावित किया है। इस प्रक्रिया में परंपरागत नीति, सिद्धांत और विचारधारा का अंत हुआ और आधुनिकता से लबालब डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया मंचों और सिनेमा ने हिंदी भाषा और कविता के राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर पहुँचाकर उसे वैश्विक पाठक-वर्ग से जोड़ा है। आज हिंदी कविता न केवल स्थानीय यथार्थ की अभिव्यक्ति है,

© Copyright @ Authors

बल्कि वह वैश्विक अनुभवों और चुनौतियों से संवाद करती हुई एक सशक्त साहित्यिक माध्यम के रूप में विकसित हो रही है। इस प्रकार भूमंडलीकरण ने हिंदी कविता को नए कथ्य, नई भाषा-संरचना और नई संवेदनात्मक भूमि प्रदान की है, जिसने उसे समकालीन विश्व-साहित्य के व्यापक परिदृश्य में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

हिंदी भाषा में कविता लेखन की ऐतिहासिक महत्व को रेखाकित करते हुए प्रभाकरन हेब्बार इल्लत ने अपने आलेख 'भाषा का समाज और अध्ययन' में लिखा है कि **"भारत में हिंदी भाषा: दशा एवं दिशा' शीर्षक अध्याय भी बहुलतावादी भाषा के स्वरूप को दर्शाता है। हिंदी कबीर के लिए 'बहता नीर है' है तो तुलसीदास के लिए 'भनिति भोरी माति छोरो' है। इसी हिंदी को मसनवियों की सहायता से खुसरो ने फारसी से मिलाकर सुगंधित किया। रहीम ने अपने दोहों और रसखान ने अपने सवैंयों के माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाया। इसमें सूर का प्रेम रस है। भूषण का वीर रस है। तुलसी के राम की जयगाथा है। बिहारी के कान्हा की नाच है। हिंदी भाषा की इसी संपन्नता को अंग्रेजी शासन ने बर्बाद किया है। मेकाले ने अपने शिक्षण कार्यवृत्त के माध्यम से भारतीय भाषाओं पर अपनी भाषा एवं संस्कृति का वर्चस्व स्थापित किया है"**[1] उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषा की प्रकृति आरंभ से ही बहुलतावादी, समन्वयी और लोकधर्मी रही है। कबीर, तुलसी, खुसरो, रहीम, रसखान, सूर, भूषण और बिहारी जैसे कवियों की रचनाओं में हिंदी भाषा और कविता विभिन्न भाषिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धाराओं से संवाद करती दिखाई देती है। यह परंपरा हिंदी कविता को किसी एक वर्ग या सत्ता की भाषा न बनाकर जनसाधारण की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है।

समकालीन दौर में भूमंडलीकरण को एक प्रकार का नया उपनिवेशवाद भी माना जा सकता है, जहाँ अंग्रेज़ी पुनः वैश्विक बाजार और ज्ञान-व्यवस्था की केंद्रीय भाषा बनकर उभरती है। हालांकि डिजिटल मीडिया, सोशल नेटवर्क और वैश्विक संचार माध्यमों ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया है, लेकिन यह मंच प्रायः बाजारवादी और उपभोक्तावादी संरचना से संचालित है। आधुनिक कवि राम दशरथ मिश्र ने अपनी कविता 'विश्व ग्राम' में भूमंडलीकरण के आगमन से जुड़ी प्रारंभिक उत्सुकता, आकर्षण और मोह को अत्यंत संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त किया है-

"विश्व ग्राम

कितना अच्छा लगा था यह शब्द

एक संगीत सा गूंज उठा था मन में

वहां कितनी सदियों के बाद

© Copyright @ Authors

हमारा वसुदेव कुटुंबकम रूप ले रहा है

अब देश तो क्या

पूरा विश्व एक गांव में प्ररिणत हो रहा है।"[2]

कविता में 'विश्व ग्राम' की अवधारणा एक ऐसे स्वप्न के रूप में उभरती है, जो मानव एकता, वैश्विक जुड़ाव और 'वसुदेव कुटुंबकम' जैसे सांस्कृतिक आदर्शों की पूर्ति का आभास कराती है। कवि के लिए यह शब्द आरंभ में एक संगीतात्मक अनुभव की भाँति मन में गूँज़ता है, मानो सदियों बाद समूचा विश्व एक परिवार का रूप ले रहा हो। किंतु इस उत्साह और आशा के आवरण के भीतर कविता भूमंडलीकरण में निहित स्वार्थ, असमानता और विडंबनाओं की ओर भी संकेत करती है।

अरुण कमल की कविता 'नए इलाके में' भूमंडलीकरण से उपजे शहरी विस्तार की आलोचना करते हुए यह रेखांकित करती है कि आधुनिक विकास की चमक के पीछे अतीत की स्मृतियाँ, स्थानीय पहचान और मानवीय अपनापन धूमिल होता चला जा रहा है-

"नए इलाके में

इन नए बस्ते इलाकों में

जहां रोज बना रहे हैं नए-नए मकान

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान

खोजता हूं ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूं ढहा हुआ घर

और जमीन का खाली टुकड़ा जहां से बाएं

मुड़ना था मुझे"[3]

यह शहरी विस्तार और भूमंडलीकरण से उपजी स्थानिक विस्मृति, सांस्कृतिक विच्छेदन और स्मृति-विस्थापन की कविता है। कविता में 'नए इलाके' का बिंब केवल भौगोलिक परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि वह उस आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है, जहाँ भूमंडलीकरण और बाज़ारवादी विकास के दबाव में लगातार नए-नए मकानों का निर्माण हो रहा है। यह निर्माण प्रक्रिया अतीत के स्थायी और परिचित संकेतों—जैसे पीपल का पेड़, ढहा हुआ घर, खाली ज़मीन–को मिटा देती है। परिणामस्वरूप मनुष्य अपने ही परिचित भूगोल में अजनबी बन जाता है।

© Copyright @ Authors

इस प्रकार कविता यह दिखाती है कि भूमंडलीकरण के अंतर्गत होने वाला विकास केवल भौतिक संरचनाओं को नहीं बदलता, बल्कि वह मनुष्य के स्मृति-बोध, संबंधों और पहचान को भी विस्थापित कर देता है।

कवि दिनेश कुमार अपनी कविता 'भूमंडलीकरण' में भूमंडलीकरण से प्रभावित आमजन जीवन के मार्मिक अनुभव को अभिव्यक्त करते हैं-

"हमारे रसोईघर में भी रहने लगा है

भूमंडलीकरण

अनाजों के साथ अदृश्य रूप से लिपटा हुआ

आयातित गेहूं और दाल और दूसरी तमाम चीज़ें

कराती है अहसास

उसकी उपस्थिति की

परचून की दुकान पर रंग बिरंगे पैकेटों में

मुस्कराता रहता है भूमंडलीकरण

मायूस होकर दुकानदार मूल्यवृद्धि की सूचना देता है

हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर

भीड़ में भी चलता रहता है भूमंडलीकरण"[4]

भूमंडलीकरण अब केवल बाजार, उद्योग और पूंजीपति वर्ग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आम जनता के घरेलू जीवन की सबसे निजी जगह रसोई तक पहुंच चुका है। गेहूं, दाल की पैकट अब केवल वस्तु नहीं, बल्कि विज्ञापन ब्रांड और उपभोक्तावादी लुभावना संस्कृति का प्रतीक बन चुका है। भूमंडलीकरण अब आमजन जीवन की रोजमर्रा में हस्तक्षेपकारी भूमिका में है।

समकालीन कवयित्री कात्यायनी अपनी कविता 'इक्कीसवीं सदी' में भूमंडलीकरण से निर्मित वर्तमान विश्व-परिदृश्य की तीखी और भयावह तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। वे इक्कीसवीं सदी को विकास और प्रगति के उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि हिंसा, दमन और अमानवीय सत्ता-संरचनाओं के विस्तार के रूप में देखती हैं–

© Copyright @ Authors

"एक विशाल मानचित्र फैला पड़ा है।

उस पर रखा हुआ है एक खून सना चाकू।

आसमान में तारों के बीच एक लोहे का झाड़ू चमक रहा है।

हर रात कुछ और नीचे आता हुआ।"[5]

कात्यायनी की यह कविता स्पष्ट करती है कि भूमंडलीकरण केवल आर्थिक प्रक्रिया नहीं है। बल्कि यह हिंसा और शोषण का उत्प्रेरक भी है। भूमंडलीकरण की ताकत आम जनजीवन, संस्कृतियों और मानवीय मूल्यों को नष्ट करने की ओर अग्रसर है। इस प्रकार उनकी कविता समकालीन हिंदी कविता में भूमंडलीकरण के आलोचनात्मक और प्रतिरोधी स्वर को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करती है।

हिंदी कविता में भूमंडलीकरण के प्रभावों को शहरी अनुभव, विस्थापन और मानसिक थकान के माध्यम से भी अभिव्यक्त किया गया है। इस संदर्भ में कवयित्री रश्मि भारद्वाज की कविता 'शहर में एक उम्र' अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो महानगरों के आकर्षण और उसके भीतर छिपी निराशा को उजागर करती है—

"शहर से पूछो कि यहीं आने को निकले थे हम

तो उसकी आँखों में भी वही ऊब और नींद दिखती है

जो हमारी आँखों के इर्द-गिर्द बनते जा रहे काले घेरे में जमा है

हमारी ताज़ा आँखों में तब एक नया शहर बसा था।"[6]

कविता भूमंडलीकरण के तहत विकसित होते शहरों के मिथकीय स्वप्न और वास्तविक अनुभव के बीच के अंतर को रेखांकित करती है। यहाँ 'शहर' केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि रोज़गार, अवसर और आधुनिकता के वादों से भरा वह प्रतीक है, जिसकी ओर भूमंडलीकरण ने बड़े पैमाने पर जनसंख्या को आकर्षित किया है।

भूमंडलीकरण से प्रभावित दुनिया अब समानता की अवधारणा से दूर होती चली गई है और पूँजीपतियों तथा कारपोरेट प्रभुत्व में तब्दील हो गई है। वह दुनिया, जिसमें मानवीय और प्राकृतिक संतुलन की कल्पना की जाती थी, अब अतीत का हिस्सा बन चुकी है। प्रकृति स्वयं को धीरे-धीरे विदा करती हुई मानो कह रही है– 'मुझे याद मत रखना।' इस विडंबनापूर्ण यथार्थ को कवि शंभुनाथ ने अपनी कविता 'कॉर्पोरेट शरणं गच्छामि' में अत्यंत संजीवता और व्यंग्यात्मक तीखेपन के साथ रेखांकित किया है–

© Copyright @ Authors

"खुल रही थी सामने एक नई दुनिया

चल रहा था मंत्रोच्चारण–

कॉर्पोरेट शरणं गच्छामि।

वे बन चुके थे पुण्यार्थी महादानी,

सामने थे करोड़ों कटोरे,

अब सब कुछ कॉर्पोरेट था।"[7]

यह कविता भूमंडलीकरण के दौर में कारपोरेट संस्कृति के सर्वव्यापक विस्तार और उसकी सामाजिक विडंबनाओं को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती है।

निष्कर्ष-

भूमंडलीकरण ने हिंदी कविता को गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रभाव केवल आर्थिक या सामाजिक परिवर्तनों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने मनुष्य के संबंधों, संवेदनाओं, भाषा और सांस्कृतिक चेतना को भी नई चुनौतियों के सामने खड़ा किया है। बाजारवाद, उपभोक्तावाद, कारपोरेट संस्कृति और तकनीकी वर्चस्व, गांव से शहर, शहर से शहर बनने के बीच आम आदमी की पीड़ा, असुरक्षा और विस्थापन हिंदी कविता के प्रमुख सरोकार बनकर उभरे हैं। समकालीन हिंदी कवियों ने भूमंडलीकरण को केवल प्रगति के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसके भीतर छिपे शोषण, असमानता और मानवीय मूल्यों के क्षरण को तीखी आलोचनात्मक दृष्टि से देखा है। प्रकृति के विनाश, श्रम के अवमूल्यन, भाषा के बाज़ारीकरण की प्रवृत्ति तथा सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन के विरोध ने हिंदी कविता में प्रतिरोध का स्वर रचा है। इस प्रक्रिया में हिंदी कविता न केवल यथार्थ को रेखांकित करती है बल्कि मानवीय संवेदना और सामाजिक न्याय की पक्षधर भी हो रही है। इस प्रकार, भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी कविता एक सशक्त वैचारिक हस्तक्षेप के रूप में सामने आती है, जो वैश्विक प्रभावों के बीच स्थानीय जीवन, लोक-संस्कृति और मानवीय गरिमा की रक्षा का संघर्ष करती दिखाई देती है।

संदर्भ सूची :-

1. बनासजन आलोचना का परिदृश्य, नवंबर 2023, अंक 67, पृ. 93,94
2. समकालीन भारतीय साहित्य, स. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, जुलाई-अगस्त 2011, पृ. 91
3. अरुण कमल, प्रतिनिधि कविताएं, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 48,49

© Copyright @ Authors

4. **https://kavitakosh.org/kk/%E0%A**
5. कथादेश, कविता और स्त्री, स. हरि नारायण, मार्च-अप्रैल 2025, अंक 1-2 , पृ. 83
6. https://www.hindwi.org/kavita/shahr-mein-ek-umr-rashmi-bhardwaj-kavita?sort=popularity-desc
7. शंभू नाथ, ईश्वर का दुख, सेतु प्रकाशन, पृ. 30

© Copyright @ Authors